थाना भवन-उ.प्र.। मंत्री सुरेश राणा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुषमा। साथ हैं नीता राणा।

नवरंगपुर-ओडिशा। मुलाकात के दौरान पुलिस अधीक्षक एस.पी. मुकेश कुमार भामु,आई.पी.एस. को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.राखी।

बिहार-मीरगंज। रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में इंसपेक्टर राम सेवक यादव, ब्र.कु.सुनिता, ब्र.कु.विनोद तथा अन्य।

हरदोई-उ.प्र.। 'कर्मयोग में राजयोग का प्रयोग' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए जिला जज जय शील पाठक, जज के.के.सिंह, प्रेसीडेंट विजय प्रताप सिंह द्विवेदी, वकील सर्वेन्द्र श्रीवास्तव, ब्र.कु. रोशनी तथा ब्र.कु. शान्ति।

बल्लभगढ़-हरियाणा। ए.सी.पी. राधे श्याम, एस.एच.ओ. नरेन्द्र सागवान, एस.डी.एम. प्रताप सिंह तथा अन्य पुलिसकर्मियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ ब्र.कु. सुशीला।

सम्बलपुर-ओडिशा। विश्व संस्कृत दिवस तथा रक्षाबंधन के अवसर पर जी.एम. युनिवर्सिटी में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. पार्बती। साथ हैं प्रो. अतानु कू पति,वाइस चांसलर,जी.एम. युनिवर्सिटी, डॉ. उमा चरण पति,डेप्युटी रजिस्ट्रार, डॉ. हरेकृष्ण मेहर,रिटा. एच.ओ.डी. एंड प्रोफेसर,जी.एम. युनिवर्सिटी व अन्य।

आदमी झूठ क्यों बोलता है?

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

आदमी क्यों झूठ बोलता है? हम अभय और निर्भयता की बात करते हैं। सबसे बड़ा भय यह है कि हम सच ही नहीं बोलते। आज का मानव न केवल झूठ बोलता है, बल्कि उसका व्यवहार भी सच पर आधारित नहीं है। न्यायालय में भी न्याय मिलने के लिए सत्य बोलने की ज़रूरत है। अगर सच नहीं बोला जायेगा तो न्याय कैसे होगा? जज कैसे समझेगा? एक चालाक वकील केस अपने हक में बनाकर अपनी तरफ फैसला करा देगा, या जज को पैसे खिलाके अपना काम करा लेगा। वहाँ न्याय होगा या अन्याय होगा? लोग कहते हैं कि अरे भाई, अभी कलियुग है, आजकल न्यायालयों में भी न्याय कहाँ होता है! जब तक सत्य नहीं बोला जायेगा, न्याय कैसे होगा, इसी तरीके से हमारे जीवन में सत्य नहीं होगा, संकल्प में भी सत्य नहीं होगा, वाणी और कर्म में तो बाद में आता है, तो कैसे आयेगा? अगर हम किसी के बारे में सच नहीं बोल रहे हैं तो इसका अर्थ है कि उसके बारे में हमारे मन में ईर्ष्या है, घृणा है, द्वेष है, हम उस व्यक्ति को बड़ों की नज़र से गिराना चाहते हैं, हम उस व्यक्ति से कोई बदला लेना चाहते हैं, ऐसे थोड़ेही कोई किसी के बारे में झूठ बोल देता है। झूठ बोलने से उनको ज़रूर फायदा होता है, चाहे थोड़े से समय के लिए क्यों ना हो। वास्तव में फायदा नहीं होगा, होगा तो बेड़ा गर्क। नुकसान होगा, लेकिन समझते हैं कि इससे कुछ फायदा होगा। ये बाल बुद्धि है, अबोध बुद्धि है। जैसे कोई बच्चा ब्लेड को खिलौना समझकर खेले तो अपना ही हाथ काट बैठेगा। ऐसे ही वकील अपने क्लाइंट के लिए झूठ बोलता है, बिज़नेसमैन अपने बिज़नेस के लिए झूठ बोलता है, हम फायदे के लिए झूठ बोलते हैं, लेकिन झूठ बोलने वाले वहीं के वहीं रह जाते हैं। उनमें कोई परिवर्तन नहीं होता, ज़िन्दगी भर उन संस्कारों को और प्रगाढ़ बनाये जाता है। हम परिवर्तन की बात करते हैं, लेकिन कहाँ से परिवर्तन होगा! परिवर्तन की पहली सीढ़ी पर ही हम नहीं चढ़े।

क्या हम ये जानते हैं कि भगवान हमारी बातें सुनता है?

क्या हमारे में इतनी भी नैतिकता नहीं है कि हमने सत्य स्वरूप भगवान के साथ अपना संग जोड़ा है? वैसे कहते हैं कि परमात्मा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता, वो जानीजाननहार है, जो हम करते हैं, वो सुनता भी है और देखता भी है। तो हम झूठ बोलते हैं तो क्या भगवान नहीं सुनता? भगवान से लोग धोखा करना चाहते हैं, क्या इतने चालाक हो गये हो कि अपनी मक्कारी से भगवान पर भी जीत पाना चाहते हो? इसका मतलब क्या हुआ? क्या हमने परमात्मा को समझा है? क्या हमने ये समझा है कि परमात्मा हमसे क्या चाहता

अगर नियत साफ है तो कुछ भी चालाकी, मक्कारी, चापलूसी करने की ज़रूरत ही नहीं। भगवान के महावाक्य हैं, बच्चे! नियत साफ होगी तो मुराद हासिल होगी। मुहब्बत करेंगे तो मेहनत करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। क्या हम परमात्मा की ये बात मानते हैं? परमात्मा कहते हैं कि ज़िम्मेवारी मेरे को दे दो, तुम क्यों चिंता करते हो। नियत साफ रखो, सबकुछ तुमको मैं दे देता हूँ।

है? इसका परिणाम क्या होगा? कोई कहता है, मुझे तो ज्ञान समझ में आ गया, मैं ज्ञान में चल रहा हूँ। ज्ञान में चल रहा हूँ, और ज्ञान होने के बाद की हुई गलती का सौगुणा दंड मिलेगा, सज़ा मिलेगी, क्या ये भी याद रहता है? हम कहते हैं कि हम परमात्मा को मानते हैं, हम आस्तिक हैं। भक्तिमार्ग में भी लोग परमात्मा को मानते हैं, लेकिन जानते नहीं हैं। हम तो जानकर मानते हैं। परमात्मा को जानते हैं, लेकिन क्या परमात्मा की बात को मानते हैं? किसी ने कहा कि हम गीता को मानते हैं। गीता को मानते हो, लेकिन क्या गीता की मानते हो? गीता में लिखा हुआ है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह नर्क के द्वार हैं, गीता की ये बातें मानते हो? ऐसे ही गीता को मानने का क्या भाव है?

जब हम कहते हैं कि हमने परमात्मा को जाना है, माना है, तो हमारे कर्म क्या कहते हैं? हमारे कर्म कैसे हैं, हमारे कर्मों से क्या प्रतीत होता है, क्या हमने परमात्मा को जाना है? हम कहते हैं कि सच्चे के साथ सच्चे होकर चलो, नियत साफ तो मुराद हासिल, तो नियत ही खराब है तो जितना भी योग लगाइये, जितने भी भाषण करिये, रहेंगे वहीं के वहीं। अगर नियत साफ है तो कुछ भी चालाकी, मक्कारी, चापलूसी करने की ज़रूरत ही नहीं। भगवान के महावाक्य हैं, बच्चे! नियत साफ होगी तो मुराद हासिल होगी। मुहब्बत करेंगे तो मेहनत करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। क्या हम परमात्मा की ये बात मानते हैं? परमात्मा कहते हैं कि ज़िम्मेवारी मेरे को दे दो, तुम क्यों चिंता करते हो। नियत साफ रखो, सबकुछ तुमको मैं दे देता हूँ।

परमात्मा के मन में क्या भाव हैं, यह जानते हो?

व्यक्ति के मन में क्या है, उसके बोल बताते हैं, बोल उसके भाव को प्रकट करते हैं, लेकिन परमात्मा के महावाक्य परमात्मा के मन को प्रकट करते हैं। वचन, मनुष्य के मन की अभिव्यक्ति होते हैं। विचार, मंथन, चिंतन, मनन मन के भावों को वाणी व्यक्त करती है। भाषा में अभिव्यक्त करती है। परमात्मा के जितने भी महावाक्य हैं, परमात्मा के मन में क्या है, ये बताते हैं। उनमें परमात्मा ने बता दिया है कि उसको कैसे बच्चे चाहिए। साफ दिल वाले, साफ नियत वाले, मुहब्बत वाले। तो हम अगर अपने को ज्ञानी समझते हैं और परमात्मा के भाव को जानते हैं, उनके जैसा बनना चाहते हैं तो हमें सत्य साफ नियत वाले बनकर परमात्मा का प्यारा बनना है। स्वयं को स्वयं द्वारा ही होने वाले नुकसान से बचाना है। तो हम झूठ क्यों बोलें? झूठ क्यों करें? दूसरे को गिराने की क्यों सोचें? जब इसमें हमारा ही अकल्याण है।

अबोहर-पंजाब। बी.एस.एफ. डी.आइ.जी. मधुसूदन शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुनीता।

कानपुर-उ.प्र.। अपर पुलिस महानिदेशक अविनाश चंद्रा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.अर्चना।

दिल्ली-शक्तिनगर। वजीराबाद क्षेत्र की नगर निगम पार्षद बहन अमर लता सागवान को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपा।